Lyceum India Journal of Social Sciences | e-ISSN: 3048-6513
Peer-reviewed • Indexed • Open Access • Monthly Online Journal
Vol. 3, No. 8 | June 2026
DOI: 10.5281/zenodo.21005475

भारतीय अर्थव्यवस्था: वर्तमान स्थिति, विकास, चुनौतियाँ एवं महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

डॉ. अंबिका शर्मा[1]

[1] सहायक प्राध्यापक, स्वामी रामप्रकाश डिग्री कॉलेज, मुरहास कन्हैया, फर्रुखाबाद

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेज़ी से विकसित होने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने नियोजित विकास, औद्योगीकरण, कृषि सुधार, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जैसी नीतियों को अपनाकर आर्थिक प्रगति की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। वर्तमान समय में भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है तथा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के आधार पर अग्रणी देशों में अपना स्थान बना चुका है। विशाल जनसंख्या, बढ़ता उपभोक्ता बाजार, तकनीकी नवाचार, डिजिटलीकरण और युवा कार्यबल भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख शक्तियाँ हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास केवल उत्पादन और आय वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक समावेशन और लैंगिक समानता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण आज आर्थिक विकास का एक प्रमुख आधार बन चुका है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति तब तक पूर्ण नहीं मानी जा सकती जब तक उसकी आधी आबादी आर्थिक गतिविधियों में समान रूप से भागीदारी न करे। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो चुका है। यह लेख भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति, विकास, प्रमुख उपलब्धियों, चुनौतियों तथा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शोध बिंदु: निवेश और आर्थिक विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, कृषि एवंव्यापार, महंगाई, महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण

भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिनी जाती है। आर्थिक सुधारों, विदेशी निवेश, डिजिटलीकरण और सेवा क्षेत्र के विस्तार ने आर्थिक विकास को नई गति प्रदान की है। भारत का GDP निरंतर बढ़ रहा है और देश वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः तीन क्षेत्रों पर आधारित है—

1. कृषि क्षेत्र: कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। देश की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। खाद्यान्न उत्पादन, डेयरी, बागवानी और पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं।
2. औद्योगिक क्षेत्र: औद्योगिक क्षेत्र विनिर्माण, निर्माण, खनन और ऊर्जा उत्पादन से संबंधित है। "मेक इन इंडिया" जैसी योजनाओं ने औद्योगिक उत्पादन और निवेश को बढ़ावा दिया है।
3. सेवा क्षेत्र: सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक योगदान देता है। सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, पर्यटन, स्वास्थ्य, शिक्षा, ई-कॉमर्स तथा दूरसंचार जैसे क्षेत्रों ने आर्थिक विकास को गति प्रदान की है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली, UPI, इंटरनेट बैंकिंग तथा स्टार्टअप संस्कृति ने आर्थिक गतिविधियों को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है। भारत आज विश्व में डिजिटल लेन-देन के क्षेत्र में अग्रणी देशों में शामिल है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास:

स्वतंत्रता के बाद का आर्थिक विकास- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी तथा औद्योगिक विकास सीमित था। सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आधारभूत संरचना, कृषि और उद्योगों के विकास पर बल दिया।

हरित क्रांति- 1960 के दशक में हरित क्रांति ने कृषि क्षेत्र में नई क्रांति ला दी। उन्नत बीज, सिंचाई सुविधाएँ और आधुनिक तकनीकों के उपयोग से खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा भारत खाद्य सुरक्षा की दिशा में आत्मनिर्भर बना।

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण- 1991 में आर्थिक सुधारों के अंतर्गत व्यापार प्रतिबंधों में कमी, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा दिया गया। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक बाजार से जुड़ गई और आर्थिक विकास दर में तेजी आई।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति- भारत सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विश्व की प्रमुख शक्ति बनकर उभरा है। बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे और गुरुग्राम जैसे शहर वैश्विक IT केंद्र बन चुके हैं। सॉफ्टवेयर निर्यात और डिजिटल सेवाओं ने विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप संस्कृति- डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और स्किल इंडिया जैसी योजनाओं ने नवाचार, उद्यमिता और तकनीकी विकास को प्रोत्साहित किया है। भारत आज विश्व का प्रमुख स्टार्टअप केंद्र बन चुका है।

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था:

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के समावेशी विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को आय अर्जित करने, संसाधनों पर अधिकार रखने, वित्तीय निर्णय लेने तथा आर्थिक गतिविधियों में समान अवसर प्राप्त होना। भारत में महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में प्रगति ने आर्थिक विकास को सकारात्मक दिशा प्रदान की है। महिला सशक्तिकरण केवल सामाजिक न्याय का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास की आवश्यकता भी है।

महिला श्रम भागीदारी- महिलाएँ कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, लघु उद्योग और सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनकी बढ़ती भागीदारी से राष्ट्रीय आय और उत्पादकता में वृद्धि होती है।

वित्तीय समावेशन- प्रधानमंत्री जनधन योजना ने महिलाओं को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बैंक खाते, डिजिटल भुगतान और वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता ने महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर बनाया है।

स्वयं सहायता समूहों की भूमिका- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह (SHGs) महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बने हैं। ये समूह महिलाओं को बचत, ऋण और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। लाखों महिलाएँ डेयरी, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण और सूक्ष्म उद्यमों से जुड़कर आय अर्जित कर रही हैं।

महिला उद्यमिता- सरकार की मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया तथा स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा दिया है। अनेक महिलाएँ आज सफल उद्यमी बनकर रोजगार सृजन में योगदान दे रही हैं।

डिजिटल सशक्तिकरण- डिजिटल तकनीकों ने महिलाओं को नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। ऑनलाइन व्यवसाय, ई-कॉमर्स, डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन शिक्षा ने महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बढ़ाया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख उपलब्धियाँ:

1. तीव्र आर्थिक विकास- भारत ने पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय आर्थिक विकास दर्ज किया है। निवेश, उत्पादन और उपभोग में वृद्धि ने GDP वृद्धि को प्रोत्साहित किया है।
2. विदेशी निवेश में वृद्धि- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में निरंतर वृद्धि हुई है। विदेशी निवेश ने रोजगार, तकनीक हस्तांतरण और औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया है।
3. डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार- UPI, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान प्रणालियों ने आर्थिक लेन-देन को अधिक पारदर्शी और सरल बनाया है।
4. आधारभूत संरचना का विकास- सड़क, रेल, बंदरगाह, हवाई अड्डे और ऊर्जा क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश किया गया है, जिससे आर्थिक गतिविधियों को गति मिली है।
5. वैश्विक भूमिका में वृद्धि- भारत G20 तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है।
6. महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भागीदारी- महिलाओं की शिक्षा, उद्यमिता और रोजगार में वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे समावेशी विकास को बल मिला है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ:

1. बेरोजगारी- भारत में बड़ी संख्या में युवा कार्यबल उपलब्ध है, लेकिन पर्याप्त रोजगार अवसरों का अभाव गंभीर चुनौती बना हुआ है।
2. गरीबी- आर्थिक विकास के बावजूद गरीबी की समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसका प्रभाव अधिक दिखाई देता है।
3. आय असमानता- आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है, जिससे आय और संपत्ति की असमानता बढ़ी है।

4. महंगाई- खाद्य पदार्थों, ईंधन और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि आम जनता की क्रय शक्ति को प्रभावित करती है।
5. कृषि संकट- सिंचाई की कमी, प्राकृतिक आपदाएँ, लागत में वृद्धि और बाजार संबंधी समस्याएँ कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
6. क्षेत्रीय असंतुलन-देश के विभिन्न राज्यों में विकास का स्तर समान नहीं है। कुछ राज्य अत्यधिक विकसित हैं जबकि कुछ अभी भी पिछड़े हुए हैं।
7. पर्यावरणीय समस्याएँ- जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से सतत विकास प्रभावित हो रहा है।
8. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में बाधाएँ- महिलाओं की श्रम भागीदारी दर अभी भी अपेक्षाकृत कम है। समान कार्य के लिए असमान वेतन, कौशल की कमी, सामाजिक रूढ़ियाँ और कार्यस्थलों पर सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ महिलाओं की आर्थिक उन्नति में बाधक हैं।

आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण हेतु आवश्यक उपाय:

1. रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया जाए। कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों का विस्तार ।किया जाए।
2. MSMEs को प्रोत्साहन दिया जाए। शिक्षा और कौशल विकास में निवेश बढ़ाया जाए।
3. महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाए। महिलाओं के लिए वित्तीय सेवाओं की पहुँच बढ़ाई जाए।
4. समान कार्य के लिए समान वेतन सुनिश्चित किया जाए।
5. सुरक्षित और अनुकूल कार्य वातावरण उपलब्ध कराया जाए।
6. डिजिटल साक्षरता और तकनीकी प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
7. ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
8. हरित और सतत विकास को प्राथमिकता दी जाए।
9. समावेशी विकास नीतियों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

निष्कर्ष:

भारतीय अर्थव्यवस्था ने स्वतंत्रता के बाद से उल्लेखनीय प्रगति की है और आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। उदारीकरण, तकनीकी विकास, विदेशी निवेश, डिजिटल क्रांति तथा सेवा क्षेत्र के विस्तार ने भारत को आर्थिक रूप से अधिक सशक्त बनाया है। वर्तमान समय में भारत तीव्र आर्थिक विकास, बढ़ते निवेश और नवाचार के कारण वैश्विक स्तर पर एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है।

हालाँकि बेरोजगारी, गरीबी, आय असमानता, कृषि संकट, महंगाई और पर्यावरणीय चुनौतियाँ अभी भी विकास के मार्ग में बाधक हैं। इन चुनौतियों का समाधान समावेशी विकास, कौशल विकास, रोजगार सृजन और सतत आर्थिक नीतियों के माध्यम से किया जा सकता है।

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के समग्र विकास की कुंजी है। जब महिलाएँ शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता और वित्तीय निर्णयों में सक्रिय भागीदारी करती हैं, तब न केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति में सुधार होता है, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र की आर्थिक प्रगति भी सुनिश्चित होती है। महिला सशक्तिकरण से श्रम उत्पादकता बढ़ती है, गरीबी कम होती है और सामाजिक समानता को बल मिलता है।अतः यह आवश्यक है कि भारत आर्थिक विकास के साथ-साथ महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, वित्तीय समावेशन और उद्यमिता को प्राथमिकता दे। यदि देश अपनी युवा शक्ति, तकनीकी क्षमता और महिला संसाधनों का प्रभावी उपयोग करता है, तो भारत निकट भविष्य में विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में और अधिक सशक्त स्थान प्राप्त कर सकता है। समावेशी, संतुलित और सतत विकास की दिशा में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण भारत के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला सिद्ध होगा।

संदर्भ (References)

Asian Development Bank. Asian Development Outlook. Manila.

International Labour Organization (ILO). Women in Employment Reports. Geneva.

Mishkin, Frederic S. The Economics of Money, Banking and Financial Markets. Pearson Education.

National Rural Livelihoods Mission (NRLM). Self Help Groups and Women Empowerment Reports. UN Women. Women's Economic Empowerment Reports. New York.

NITI Aayog. Women Entrepreneurship and Economic Empowerment Reports. New Delhi.

OECD. Economic Outlook Reports. Paris.

Samuelson, Paul A. & Nordhaus, William D. Economics. McGraw-Hill Education.

United Nations Development Programme (UNDP). Human Development Report. New York.

World Bank. World Development Report. Washington D.C. International Monetary Fund (IMF). World Economic Outlook Report. Washington D.C.

अग्रवाल, ए.एन. भारतीय अर्थव्यवस्था: विकास एवं नियोजन. विकास पब्लिशिंग हाउस। जैन, पी.सी. समष्टि अर्थशास्त्र. साहित्य भवन प्रकाशन।

आहूजा, एच.एल. समष्टि अर्थशास्त्र: सिद्धांत एवं नीति. एस. चंद पब्लिकेशन्स।

गुप्ता, एस.बी. मौद्रिक अर्थशास्त्र. साहित्य भवन प्रकाशन।

दत्त, रुद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. भारतीय अर्थव्यवस्था. एस. चंद पब्लिकेशन्स।

नीति आयोग. विभिन्न नीति प्रतिवेदन एवं दस्तावेज़. नई दिल्ली।

भारत सरकार. आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey). वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI). मौद्रिक नीति प्रतिवेदन (Monetary Policy Reports). मुंबई।

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI). वार्षिक प्रतिवेदन (Annual Reports). मुंबई।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार. महिला सशक्तिकरण संबंधी वार्षिक प्रतिवेदन.

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय (MOSPI). राष्ट्रीय आय लेखा सांख्यिकी. नई दिल्ली।

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*